Date

Class-8 Sub-Hindi

Page No.

Expt. No.

पाठ-3

खुशबू आज भी याद है

सारांश - लेखक ने प्रारंभिक स्कूल (प्राइमरी एजूकेशन) की पढ़ाई गाँव में रहकर ही की वे अपने स्कूल समय की बातें बताते हुए कहते हैं कि मेरा एक दोस्त था 'ताजवीर' हम दोनों हमेशा साथ में ही रहते, साथ ही स्कूल जाते और एक-दूसरे से अपनी बातें साझा करते थे। हमें जो गुरूजी पढ़ाते थे वे गाँव के ही रहने वाले थे। गाँव के सभी लोग उन्हें गुरूजी ही कहा करते थे। गुरूजी के बाल सफेद हो चुके थे और चश्मा लगाते थे। खादी का कुरता और चौड़ी मोहरी वाला लंबा पायजामा उनका पहनावा था। उनके कंधे पर हमेशा एक झोला टँगा रहता था। दाएँ हाथ में लंबी छड़ वाला काला छाता उनकी पहचान था। वे जड़ी-बूटी की अच्छी जानकारी रखते थे। गाँव की दुख - ~~तकलीफों में~~ तकलीफों में खड़े होते थे। वे पढ़े-लिखे और संवेदनशील व्यक्ति थे। उनके सैकड़ो विद्यार्थी थे, जिन्हें अक्षर ज्ञान देने वाले वे पहले अध्यापक थे। एक दिन उन्होंने हमे कहा कि अब मैं रिटायर होने वाला हूँ। मेरे बाद तुम्हें पढ़ाने शहर से कोई नए 'मास्साब' आएँगे। हमे लगा गुरूजी मजाक कर रहे हैं। लेकिन अचानक एक दिन नए मास्साब आ गए उनका नाम 'राम रतन सिंह राव' था। नए मास्साब पैंट-कमीज और भूरे चमड़े के जूते पहनते, उनका रंग गोरा और बाल काले थे।

Teacher's Signature :

Date

Page No.

Expt. No.

वे मुझे पहली नजर में ही भा गए। उन्होंने पहले दिन तो हमारा नाम और परिवार के बारे में ही बात की। फिर आए दिन वे हमें शहरों के किस्से सुनाते, अखबार और बच्चों की पुस्तकों के बारे में बताते, सिनेमा, रेल-गाड़ी के बारे में समझाते तथा उन्होंने ही पहली बार हमें कैमरा और दूरबीन दिखाई थी।

नए मास्साब ने हमें बताया था कि शहरों में आदमी ही आदमी को खींचता है। हाथ-रिक्शा और साइकिल-रिक्शा के बारे में बताया। मास्साब हर चीज़ का चित्र ब्लैकबोर्ड पर बनाकर समझाते थे। वे पढ़ाते-पढ़ाते किस्से-कहानियाँ भी सुनाने लग जाते थे। मुझे याद है कि उन्होंने कहा था एक दिन हम मशीन से नोट निकालेंगे और चाँद पर शहर बनायेंगे।

एक दिन मैं मास्साब के घर गया और मुख्य द्वार पर खड़ा हुआ ही था कि मास्साब ने मुझे देखा और अंदर बुलाया मास्साब के घर भात पक रहा था। भात की खुशबू मुझे मदहोश कर रही थी। मैंने तो गाँव के सरकारी गल्ले से मिला मोटा चावल ही खाया था। मास्साब मुझसे बातें कर रहे और मैं तो आँख बंद कर भात की खुशबू को अपने अंदर सहेज रहा था। वे मुझसे बोले खाना खाया मैंने 'न' में सिर हिलाया मन में खुशबूदार चावल खाने की इच्छा जागी। मास्साब जी ने दो स्टील की थालियाँ निकाली और उसमे दाल-भात परोसा, भात की खुशबू के सामने दाल कौन सी थी

Teacher's Signature : _____

Expt. No. .....

Date .....

Page No. .....

पता ही नहीं चला। मास्साब से पहले ही मैंने अपनी थाली चट कर दी। ऐसा दाल-भात मैंने पहले कभी नहीं खाया था। फिर मास्साब के खाना खाने के बाद में उठा और उनके लिए पानी लाया तथा दोनों थालियाँ और पतिले माँजकर रख दिए।

मैंने सारा किस्सा सुनाया। अगले दिन ताजवीर को से में भी आऊँगा। मास्साब के खाना खा लेने के बाद जो भात बचेगा वह एक दिन तू खाएगा और एक दिन मैं खाऊँगा। मुझे उसका सुझाव मानना पड़ा। हम दोनों स्कूल से जल्दी आते और मास्साब जी के घर चले जाते, बचा वाला चावल समझौते के अनुसार खाते, बर्तन भी एक दिन ताजवीर ~~मांजता~~ माँजता और दूसरे दिन मैं।

आज ताजवीर विदेश में बड़े होटल में रसोइयाँ है और मैं अध्यापक हूँ। मैं सभी किस्मों के भात खा चुका हूँ लेकिन मास्साब जी के घर खाये भात की खुशबू मेरे दिल-दिमाग में आज भी ताजा है।

Teacher's Signature : _____

Class - 8
Sub - Hindi

पाठ - 3

खुशबू आज भी याद है...

शब्दार्थ -

बुनियादी - प्रारंभिक

बख्शिश - इनाम, पुरस्कार

संवेदनशील - भावुक

मसलन - जैसे

जीवंत - जीता - जागता

साक्षात - आँखों के सामने

मास्साब - गुरु जी

भात - चावल

झोला - थैला

अभ्यास

प्र.। निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो।

(क) लेखक ने गुरू जी के बारे में क्या बताया?

उत्तर लेखक ने गुरूजी के बारे में बताया कि वे हमारे गाँव के ही रहने वाले थे और गाँव के सभी लोग उन्हे 'गुरू जी' कहते थे। उनके बाल सफेद हो चुके थे। वे चश्मा लगाते थे तथा खादी का कुरता और चौड़ी मोहरी वाला पायचामा पहनते थे। उनके कंधे पर एक झोला (थैला) और हाथ मे काला छाता उनकी पहचान था।

(ख) नए मास्साब ने बच्चों को क्या-क्या नई जानकारियाँ दीं?

उत्तर नए मास्साब ने बच्चों को अखबार, पत्रिकाओं की जानकारी दी। सिनेमा और रेल के बारे मे बताया तथा कैमरा दूरबीन आदि चीज़ें दिखाईं। उन्होंने बताया कि शहर में आदमी-आदमी को खींचता है। हाथ-रिक्शा और साइकिल-रिक्शा क्या होता है यह बताया। वे हर चीज़ का चित्र बनाकर ब्लैकबोर्ड पर बनाकर उसे समझाया करते थे।

PAGE NO.: 3
DATE: / /

(ग) मास्साब पढ़ाते - पढ़ाते क्या - क्या करने लगते थे?

उत्तर- मास्साब पढ़ाते - पढ़ाते किस्से - कहानियाँ सुनाते तथा वे बताते थे कि एक दिन ऐसा भी आएगा जब हम मशीन से नोट निकालेंगे और चाँद पर जाकर शहर बसाएँगे।

(घ) लेखक का मास्साब के साथ भात खाने का अनुभव अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- गाँव में सभी लोग सरकारी गल्ले से मिला मोटा चावल खाते थे और लेखक ने भी वही चावल खाया था। मास्साब के घर पहली बार खुशबूदार चावल खाकर वे इतने खुश थे कि बदले में उन्हें बर्तन माँजना भी अच्छा लग रहा था। मास्साब के साथ भात खाना उनकी जिंदगी का सबसे अच्छा अनुभव था। आज वे अध्यापक हैं और सभी किस्म के चावल खा चुके हैं लेकिन मास्साब के घर खाए भात की खुशबू लेखक के दिल - दिमाग में आज भी ताजा है।

(ङ) तजवीर और लेखक ने मास्साब के घर जाने पर क्या समझौता किया था?

उत्तर- तजवीर ने लेखक से कहा कि मास्साब के खाना खा लेने के बाद जो भात बचेगा, वह एक दिन तुम खाना और दूसरे दिन मैं

खाऊँगा तथा बर्तन भी एक दिन तुम माँजना और एक दिन मैं, इस प्रकार दोनों के बीच समझौता हुआ।

व्याकरण Grammar

प्र। निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखो।

क दोस्त - सखा मित्र

ख अँधेरा - अंधकार तिमिर

ग होशियार - चालाक चतुर

घ खुशबू - महक सुगंध

ङ. गर्व - अभिमान दर्प, घमण्ड

च घर - आलय निकेतन

प्र.2 निम्नलिखित वाक्यों में 'कि' अथवा 'की' से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) हमें लगा कि गुरु जी यूँ ही मज़ाक कर रहे हैं।
(ख) एक दिन अचानक मैंने सुना कि नए मास्टर जी आ गए हैं।
(ग) मास्साब की बाईं कलाई पर सोने की घड़ी है।
(घ) मास्साब ने बताया कि यह स्टील है।
(ङ) उन्होंने बच्चों की पत्रिकाओं के बारे में बताया।
(च) खाना खाते और मास्साब के घर की ओर चल पड़ते थे।

(1) निपात- वाक्य में कुछ अव्यय पद किसी शब्द विशेषण पर बल देने के लिए प्रयुक्त होते हैं, उन्हे निपात कहते हैं।

जैसे - ही - भी, तो, तक, मात्र आदि

प्र.3 रिक्त स्थानों की पूर्ति निपात से कीजिए।

(क) मैं घूमने निकलता तो वह भी पीछे- पीछे आ जाता।

(ख) हमें बस देखने का मौका कभी - कभी ही मिलता था।

(ग) दूर-दूर तक वे अकेले पढ़े-लिखे और संवेदनशील इनसान माने जाते थे।

(घ) इतना लम्बा नाम भी किसी का होता है।

(ङ) लेकिन मेरा ध्यान तो भात पर ही था।

(2) क्रिया — किसी काम के करने या होने का बोध कराने वाले शब्दों को क्रिया कहते हैं।

कर्म के आधार पर क्रिया दो प्रकार की होती है।

(i) अकर्मक क्रिया — जिस क्रिया का फल सीधा कर्ता पर पड़े, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

(ii) सकर्मक क्रिया — जिन क्रियाओं के साथ कर्म पाया जाता है। वे सकर्मक क्रियाएँ होती हैं।

उदा.-

(i) मास्साब प्याज और मूली काट रहे थे।
उत्तर- सकर्मक

(ii) मास्साब की रसोई में भात पक रहा था।
उत्तर अकर्मक

4

बालकनी

पाठ-प्रवेश

सहृदय लेखक ने पशु-पक्षियों के व्यवहार को करीब से अनुभव किया है। वे उनके प्रति विशेष संवेदनशील हैं। सूक्ष्मता से देखने पर पता चलता है कि पशु-पक्षियों की आदतें एवं स्वभाव हम मनुष्यों जैसे ही होते हैं। वे भी अपने बच्चों को सुरक्षा देना चाहते हैं। उसके लिए सब एकजुट होकर प्रयत्न करते हैं। उनमें भी ममता होती है। उन्हें भी दूसरे के दर्द का अहसास होता है।

अभी कुछ महीने पहले तक मैं एक दूसरे फ्लैट में रहता था। यह फ्लैट दूसरी मंज़िल पर था। इसकी एक बालकनी पार्क की तरफ़ थी। खाली वक्त में मैं इस बालकनी में बैठकर पेड़ों को देखा करता था। पेड़ों की कुछ शाखाएँ बालकनी तक आती थीं। वैसे पेड़ बहुत ऊँचे थे। मुझे पेड़ों पर करवटें लेने वाली ज़िंदगी दिखती। चिड़ियों-गिलहरियों की रोज़ की ज़िंदगी काफ़ी मज़ेदार लगती थी। पेड़ पर चिड़ियों के घोंसले थे।

कभी-कभी बंदरों की एक टोली भी पता नहीं कहाँ से भूली-भटकी आ जाती थी। तब इन पेड़ों पर एक तरफ़ शोर मच जाता था। मैं समझने की कोशिश करता कि ये बंदर कहाँ से आए होंगे? ये आवारा क्यों घूम रहे हैं? क्या इनका कोई घर नहीं है? अगर कोई घर है तो इन्हें वहाँ से किसने निकाल दिया है?

वैसे बंदरों का जीवन कठिन था। लोग इन्हें अपने घरों से भगाते रहते थे। कोई भी इनको डंडा लेकर खदेड़ देता था। कोई किधर तो कोई किधर। बँदरियाँ भी गुस्से में खोख्याती[1] थीं।

जाड़ों की सर्द रात थी। बारिश हो रही थी। उन दिनों बंदर बालकनी में आए हुए थे। रात में अचानक बालकनी से कुछ आवाज़ें आईं। मैंने उठकर बालकनी का दरवाज़ा खोला तो एक बँदरिया उछलकर भागी। उसके पेट से उसका बच्चा चिपका हुआ था। दोनों बारिश में पूरी तरह भीग गए थे। पानी, हवा और सरदी से बचने के लिए बँदरिया अपने बच्चे को लेकर बालकनी में आ गई थी। मेरे दरवाज़ा खोलते ही वह उछलकर पेड़ पर चली गई और भीगने लगी।

एक दिन मैं बालकनी में बैठा हुआ था। यह एक खूबसूरत सुबह थी। सूरज की रोशनी पेड़ों के पत्तों से छनकर घास को किसी कलाकृति[2] में बदल रही थी। मैंने देखा कि एक बिल्ला धीरे-धीरे बिलकुल चींटे की तरह पेड़ पर चढ़ने लगा है। उसकी तेज़ और चमकीली आँखें चिड़ियों के घोंसले की ओर थीं। उसकी पूरी

शब्दार्थ

1. बंदरों की 'खों-खों' करने की ध्वनि; 2. चित्र या आकृति

कोशिश थी कि बगैर किसी तरह की आवाज किए वह घोंसले तक पहुँच जाए और चिड़ियों को चट कर जाए। मैंने सोचा कि मैं बिल्ले को ऐसा करने से रोकूँ। उसे चिड़ियों के अंडे न खाने दूँ। अगर मैं चाहता तो बिल्ले को पेड़ पर चढ़ने से रोक सकता था। मुझे यह बात पसंद नहीं आ रही थी। बिल्ला गौरैया के अंडे खा जाएगा और वह उदास हो जाएगी। लेकिन मुझे तो कहानी लिखनी थी। अगर बिल्ले को पेड़ पर चढ़ने से रोक देता तो क्या कहानी बनती?

बिल्ला बहुत धीरे-धीरे होशियारी से पेड़ पर चढ़ रहा था। जल्दी ही उसे चिड़ियों ने देख लिया। लेकिन चिड़ियाँ क्या कर सकती थीं? बिल्ले के पास जातीं तो उनकी खैर न थी और बिल्ले को रोकने के लिए उसके पास तो जाना ही पड़ता।

चार-पाँच चिड़ियाँ बिल्ले के ऊपर चीं...चीं कर उड़ने लगीं। बिल्ले ने उनकी तरफ़ लापरवाही से देखा और धीरे-धीरे घोंसले की तरफ़ बढ़ता रहा। चिड़ियों की आवाज़ सुनकर जल्द ही वहाँ और चिड़ियाँ आ गईं। अब बिल्ले के सिर के ऊपर दस-बारह चिड़ियाँ ऊँची आवाज़ में चीं-चीं करने लगीं। बिल्ले का आत्मविश्वास कुछ कम होने लगा। दूसरी तरफ़ चिड़ियों की तादाद और बढ़ गई। चीं-चीं की आवाज़ लगातार बढ़ने लगी। यकीन था कि बिल्ला ऊपर चढ़ता जाएगा, क्योंकि चिड़ियाँ सिर्फ़ शोर मचाकर उसे रोक नहीं पाएँगी। लेकिन बिल्ला बिना रुके ही मुड़ा। उसके चेहरे पर ऐसे भाव आए जैसे कोई बुरा काम करते पकड़ लिया गया हो। वह नीचे उतरने लगा और कहीं चला गया।

सरदियाँ खत्म होने वाली थीं। सूरज का रंग बदलने लगा था। घास पर पड़ी ओस जल्दी गायब हो जाती थी।

अचानक एक दिन शोर मचा–"बंदर आ गए... बंदर आ गए।" मैंने बालकनी से देखा। बंदरों का वही परिवार था जो पहले भी आता रहा था। वही फिर आ धमका था। इस परिवार में एक मोटा-ताज़ा कुछ डरावना-सा बंदर था। एक बँदरिया और उसके पेट से चिपका एक छोटा-सा बच्चा था। इनके साथ दो जवान बंदर और थे। बंदरों की इस टोली ने फ्लैटों की छतों पर अड्डा जमा दिया था। मौका पाकर बंदर फ्लैटों के अंदर घुस जाते और फ्रिज खोलकर खाना वगैरह निकाल लेते थे।

हमारे फ्लैट में कंचन नाम की एक लड़की काम करती थी। वह बंगाल के किसी गाँव से आई थी और ठीक से हिंदी नहीं बोल पाती थी। मैं उसके साथ बंगाली बोलने की कोशिश किया करता। मेरा बंगाली ज्ञान 'तोमी', 'अमार' तक सीमित था। लेकिन वह बंगाली लड़की मेरी हिम्मत बढ़ाने की हर कोशिश करती थी।

एक दिन कंचन रसोई में कुछ काम कर रही थी। वह बालकनी का दरवाज़ा बंद करना भूल गई थी। हम लोग घर पर नहीं थे। अचानक मोटा बंदर फ्लैट के अंदर आ गया और खाने की मेज़ पर बैठकर फल खाने लगा। कंचन ने पीछे मुड़कर देखा तो मोटा बंदर अपने दाँत निकालकर गुर्राया। जैसे कह रहा हो–"तुम अपना काम करो, मुझे अपना काम करने दो।" कंचन इतना डर गई थी कि काँपने लगी। बंदर आराम

शब्दार्थ

3. बिना; 4. संख्या; 5. विश्वास

से फल खाता रहा। उसके बाद अपने परिवार के लिए दो-चार फल लेकर चलता बना। कंचन की जान में जान आई।

इस घटना के बाद कंचन बंदरों से डरने लगी थी। मैंने उसके लिए फ्लैट में एक डंडा भी लाकर रख दिया था। सोचा था कि अगर कभी बंदर आ गया तो कंचन के पास कुछ तो होना चाहिए।

एक दिन कंचन आई और बोली। मैं बंदरों के बारे में गलत सोचती थी। ये बहुत अच्छे होते हैं। "कैसे?" मैंने पूछा। "आप जानते हैं, बिल्ली ने बच्चे दिए हैं ना!" कंचन ने पूछा।

"हाँ, जानता हूँ," मैंने कहा।

वह बोली–"मैं कपड़े डालने छत पर गई थी... वहाँ बिल्ली के बच्चे रो रहे थे...भूखे थे...बिल्ली उन्हें छोड़कर चली गई थी...तब...वहाँ बँदरिया आ गई और बिल्ली के बच्चों को अपना दूध पिलाने लगी...ऐसा कौन करता है?"

मैं कंचन को देखने लगा। फिर बालकनी में चला गया कि शायद बँदरिया दिखाई पड़ जाए।

–असगर वजाहत

लेखक-परिचय

असगर वजाहत– जन्म: 5 जुलाई, 1946 फतेहपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं– पहर-दोपहर, कैसे आगी लगाई (उपन्यास), चलते तो अच्छा था (यात्रा-वृत्तांत), मैं हिंदू हूँ (कहानी-संग्रह) इत्यादि। इन्होंने नाट्य-लेखन तथा लघुकथा के क्षेत्र में भी ख्याति प्राप्त की है।

अभ्यास

बात पाठ की

Oral Skills

मुख से

इन प्रश्नों के उत्तर बताइए।

क. लेखक अपना खाली वक्त कहाँ बिताते थे?

ख. लेखक को चिड़ियों और गिलहरियों की ज़िंदगी कैसी लगती थी?

ग. लेखक को बंदरों का जीवन कठिन क्यों लगा?

घ. बिल्ले का आत्मविश्वास कम क्यों हो गया?

Writing Skill

कलम से

1. इन प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. लेखक के मन में बंदरों के विषय में क्या-क्या विचार आते थे?

.....

.....

Class - 8
Sub- Hindi

पाठ - 4

बालकनी

शब्दार्थ

खोरव्याती - बंदरों की 'खों-खों' करने की ध्वनि

कलाकृति - चित्र या आकृति

बगैर - बिना

तादाद - संख्या

यकीन - विश्वास

अभ्यास

प्र.1 सही उत्तर चुनकर लिखो।

क लेखक फ्लैट में रहते थे -

(i) तीसरी मंजिल पर (ii) दूसरी मंजिल पर
(iii) पहली मंजिल पर (iv) निचले तल पर

उत्तर दूसरी मंजिल पर

ख. जाड़ों की रात में लेखक ने जब बालकनी का दरवाजा खोला तो एक -
(i) मोटा बंदर गुर्राया (ii) बँदरिया उछलकर भागी
(iii) बिल्ला पेड़ पर चढ़ा (iv) चिड़िया उड़ गई
उत्तर बँदरिया उछलकर भागी

ग बँदरिया बालकनी में आई थी-
(i) पानी, हवा और सरदी से बचने के लिए
(ii) फल खाने के लिए
(iii) उछल - कूदकर खेलने के लिए
(iv) चिड़िया के बच्चे पकड़ने के लिए
उत्तर पानी, हवा और सरदी से बचने के लिए

प्र·2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो।
क लेखक के मन में बंदरों के विषय में क्या-क्या विचार आते थे?
उत्तर लेखक के मन मे विचार आता कि ये बँदर कहाँ से आते होंगे? क्या इनका कोई घर नही है? अगर कोई घर है तो इन्हें वहाँ से किसने निकाल दिया है।

ख जब बिल्ला चिड़ियों के घोंसले के पास जाने लगा तब लेखक ने क्या सोचकर उसे रोका नही?
उत्तर जब बिल्ला चिड़ियों के घोंसले के पास जाने लगा तब लेखक ने उसे यह सोचकर नही रोका क्योंकि उन्हें अपनी कहानी पूरी करनी थी।

अगर वे बिल्ले को रोकते तो बिल्ला वहाँ से चला जाता और कहानी आगे नहीं बढ़ती।

ग लेखक के बिल्ले और बंदरों के अनुभव को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर लेखक ने बिल्ले और बंदरों के विषय में यह अनुभव किया कि बिल्ला बड़ी होशियारी से पेड़ पर चढ़ा लेकिन चिड़ियों की आवाज से उसका आत्मविश्वास कम हो गया और वह नीचे उतर आया। चिड़ियों ने अपने हौंसले को टूटने नहीं दिया और अपने आत्मबल के सहारे बिल्ले को पेड़ से नीचे उतरने पर मजबूर कर दिया तथा बंदरों की दशा देख उन्हें लगा इनका कोई घर नहीं होता है। लोग इन्हें अपने घरों से भगाते हैं।

बँदरिया अपने बच्चों को पेट से लगाकर पेड़ों पर यहाँ से वहाँ छलाँग लगाती है। इनका जीवन पेड़ों पर ही बीत जाता है।

घ कंचन कौन थी? वह किस घटना के बाद बंदरों से डरने लगी थी?

उत्तर कंचन फ्लैट में काम करने वाली एक लड़की थी। एक दिन मोटा बंदर फ्लैट के अंदर आया और खाने की मेज़ पर बैठकर फल खाने लगा तथा कंचन को देखते ही दाँत निकालकर गुर्राया। यह सब देखकर कंचन बंदरों से डरने लगी।

ङ. बंदरों के विषय में कंचन की राय कैसे बदल गई? इससे उसके चरित्र का कौन-सा पक्ष उजागर होता है?

उत्तर एक दिन कंचन ने देखा कि बिल्ली के बच्चे भूख लगने के कारण बहुत रो रहे थे। तभी वहाँ बंदरिया आई और बिल्ली के बच्चों को अपना दूध पिलाने लगी। यह देख कर कचंन के मन में बंदरों के प्रति जो राय थी वह बदल गई और उसके मन में भावनात्मक पक्ष उजागर हुआ।

व्याकरण

प्र.1 दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों के लिंग तथा वचन लिखिए

		लिंग	वचन
(क)	वैसे पेड़ बहुत ऊँचे थे।	पुल्लिंग	एकवचन
(ख)	कोई भी इनको डंडा लेकर खदेड़ देता था	पुल्लिंग	एकवचन
(ग)	किसी भी तरह की आवाज किए बगैर घोंसले तक पहुँच जाए।	पुल्लिंग	बहुवचन
(घ)	लेकिन मुझे तो कहानी लिखनी थी।	स्त्रीलिंग	एकवचन
(ङ.)	सरदियाँ खत्म होने वाली थी।	स्त्रीलिंग	बहुवचन

(च) मैं कपड़े डालने छत पर गई थी।
पुल्लिंग बहुवचन

प्र. 2 करण और अपादान कारक पहचानिए और लिखिए।

करण कारक - जिस साधन या माध्यम से क्रिया के होने का बोध हो, उसे करण कारक कहते हैं

अपादान कारक - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से अलगाव (अलग) का बोध हो, उसे अपादान कारक कहते हैं।

(1) ये बंदर कहाँ से आए होंगे? करण कारक

(2) लोग इन्हें अपने घरों से भगाते रहते थे।
अपादान कारक

(3) बँदरिया के पेट से उसका बच्चा चिपका हुआ था।
करण कारक

(4) बिल्ला बहुत धीरे-धीरे होशियारी से पेड़ पर चढ़ रहा था।
करण कारक

(5) बिल्ले ने उनकी तरफ लापरवाही से देखा।
अपादान कारक

(6) इस घटना के बाद कंचन बंदरों से डरने लगी थी।
अपादान कारक

क्रिया विशेषण - क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द को क्रिया विशेषण कहते है।

कहाँ - स्थानवाचक   कैसे - रीतिवाचक

कब - कालवाचक   कितना - परिमाणवाचक

क्रिया से कहाँ, कब, कैसे, कितना, प्रश्न पूछकर निश्चित करें कि कौन सा भेद है।

प्र. ③ क्रिया विशेषण शब्दों को रेखांकित कर भेद लिखिए।

क बिल्ला बहुत धीरे-धीरे पेड़ पर चढ़ रहा था।

उत्तर रीतिवाचक

ख यकीन था कि बिल्ला ऊपर चढ़ता जाएगा।

उत्तर स्थानवाचक

ग एक बँदरिया उछलकर भागी।

उत्तर रीतिवाचक

घ वही परिवार था जो पहले भी आता रहा था।

उत्तर कालवाचक

5

भला कैसे चलूँ मैं?

पाठ-प्रवेश

कवि का जीवन के प्रति अलग दृष्टिकोण है। वे लोगों द्वारा बनाए गए पद-चिह्नों के अनुयायी नहीं हैं। पर विघ्नों को कुचलते हुए आगे बढ़ना चाहते हैं। वे दीपक की सहज नहीं अपितु प्रलयंकारी ज्वाला भावनावश पत्थर में प्राणों की कल्पना करते हैं। मंदिर में भगवान है, ऐसा सोचते हैं, जीवन जीते-जागते मा कवि 'मानव में भगवान है', इस सत्य को स्वीकारते हैं।

किसी के निर्देश पर चलना नहीं स्वीकार मुझको
नहीं है पद-चिह्न का आधार भी दरकार[1] मुझको,
ले निराला[2] मार्ग उस पर सींच जल काँटे उगाता[3]
और उनको रौंदता[4] हर कदम मैं आगे बढ़ाता।

शूल[5] से है प्यार मुझको, फूल पर कैसे चलूँ मैं?
बाँध बाती[6] में हृदय की आग चुप जलता रहे जो
और तम से हारकर चुपचाप सिर धुनता रहे जो,
जगत को उस दीप का सीमित निबल जीवन सुहाता
यह धधकता[7] रूप मेरा विश्व में भय ही जगाता।

प्रलय[8] की ज्वाला लिए हूँ, दीप बन कैसे जलूँ मैं?
जग[9] दिखाता है मुझे रे राह[10] मंदिर और मठ की
एक प्रतिमा[11] में जहाँ विश्वास की हर साँस अटकी,
चाहता हूँ भावना की भेंट मैं कर दूँ अभी तो
सोच लूँ पाषाण[12] में भी प्राण जागेंगे कभी तो,
पर स्वयं भगवान हूँ, इस सत्य को कैसे छलूँ[13] मैं?

–हरिशंकर परसाई

शब्दार्थ

1. आवश्यकता, जरूरत; 2. अनोखा, असाधारण; 3. विघ्न उत्पन्न करना; 4. कुचलता; 5. काँटा; 6. बत्ती; 7. दहकता, भड़कता; 8. नाश, विलीनता; 9. संसार; 10. रास्ता, मार्ग; 11. मूर्ति; 12. पत्थर; 12. धोखा दूँ

मुहावरे

सिर धुनना – शोक मनाना।

Class – 8 Sub - Hindi

PAGE NO :
DATE : / /

पाठ - 5

भला कैसे चलूँ मैं ?

शब्दार्थ

① दरकार - आवश्यकता, जरूरत
② निराला - अनोखा, असाधारण
③ काँटे उगाता - विघ्न उत्पन्न करना
④ रौंदता - कुचलता
⑤ शूल - काँटा
⑥ बाती - बत्ती
⑦ धधकता - दहकता, भड़कता
⑧ प्रलय - नाश, विलीनता
⑨ संसार - जग
⑩ राह - रास्ता, मार्ग
⑪ प्रतिमा - मूर्ति
⑫ पाषाण - पत्थर
⑬ छलूँ - धोखा दूँ

पाठ - 5

भला कैसे चलूँ मैं ?

कवि - श्री हरिशंकर परसाई

(क) किसी - - - - - जगाता।

सन्दर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक हिन्दी के पाठ-5 'भला कैसे चलूँ मैं ?' कविता से ली गई है इसके कवि श्री हरिशंकर परसाई जी है।

प्रसंग- कवि श्री हरिशंकर परसाई जी ने इन पंक्तियों में जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण कैसा है यह बताया है।

अर्थ- कवि श्री हरिशंकर परसाई जी कहते हैं कि मुझे किसी के आदेशों पर चलना नही है मैं लोगों द्वारा बनाए गए पद-चिह्नों पर चलना नही चाहता हूँ। मैं तो अनोखे असामान्य रास्तों पर मुश्किलों को कुचलते हुए आगे बढ़ना चाहता हूँ। मुझे काटों भरे मार्ग में अपना रास्ता बनाना है फिर भला फूलों की राहों पर कैसे चलूँ।

मुझे अपने अंदर की आग को बुझी हुई बत्ती की तरह नही रखना, अंधेरों से हारकर शोक नही मनाना है, लेकिन संसार को तो निर्बल बनाकर जीना ही

अच्छा लगता है। मेरा यह दहकता हुआ रूप जगत में डर ही पैदा करेगा।

(2) प्रलय - - - - - - - - छलूँ मैं?

अर्थ कवि कहते हैं कि मुझे दीपक की तरह सरल रूप बनकर नही जलना है। मैं तो प्रलयकारी ज्वाला की तरह जलकर संसार के लोगों को आत्मनिर्भर बनाना चाहता हूँ, लोग लेकिन लोग मुझे ही मंदिर-मस्जिद की राह दिखाते है। वे भावनावश पत्थर में प्राणों की कल्पना करते है। पत्थर को भगवान समझकर पुजते है। में भी अगर कल्पना करू की पत्थर में प्राण है, भगवान है तो मैं अपने आप को धोखा दे रहा हूँ क्योंकि मैं इस सत्य के साथ चलता हूँ कि मानव ही भगवान है हर इंसान मे भगवान बसते है। इसलिए कवि कहते है कि अन्धविश्वासी ना बने स्वयं को पहचाने।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो।

प्र.1 कवि मार्ग मे स्वयं क्यो विघ्न उत्पन्न करते है?

उत्तर कवि अपने मार्ग में विघ्न उत्पन्न करते है; क्योंकि वे संघर्ष कर मुश्किलों को कुचलते हुए आगे बढना चाहते है और यह संदेश देते है कि साधा जीवन तो कोई भी जी सकता है लेकिन इंसान वही है जो विकट परिस्थितियों में समस्या का समाधान करके आगे बढ़े।

PAGE NO.:
DATE: / /

ख कवि को फूल पर चलना क्यों स्वीकार नही है?
उत्तर कवि को सरल रास्तों व फूलों भरे रास्तों पर चलकर जीवन जीना पसंद नही, क्योंकि वे अपने अन्तरमन के अनुसार जीवन जीना चाहते है काटों भरे रास्तों में चलकर अपना रास्ता स्वयं बनाते है। जीवन में जो भी उतार - चढ़ाव आते है उनका साहसपूर्वक सामना करते हुए आगे बढ़ना ही उनका उद्देश्य है।

ग कवि की दृष्टि में जगत को दीपक का कैसा जीवन सुहाता है?
उत्तर कवि के अनुसार जगत को दीपक जैसे सरल व शान्तिपूर्वक जीवन सुहाता है, जिस प्रकार दीपक किसी के द्वारा जलाने पर जलते रहता है उसी प्रकार जगत के लोग सरल व साधारण रास्तों पर बिना कोई संघर्ष करे चलना चाहते है। वे अपने आप अपनी समस्या का समाधान न करके काटों भरे राहों में रास्ता न बनाकर दूसरों पर निर्भर रहते है दूसरों के पद-चिह्नों पर चलते है।

घ कवि में कैसी ज्वाला है? उससे वे क्या करते है?
उत्तर कवि में प्रलयकारी ज्वाला है किसी व्यक्ति की मदद लेकर व पद -चिह्नों पर चलकर उन्हें अपना जीवन नही बिताना है। वे मानव से अपने गुणों को बाहर निकालने व अपनी खुबियो को पहचानकर उसे निखारने का कह रहे है। मानव मे भगवान है इस सच्चाई को बताना चाहते है। वे इस तरह की सोच को मानव जाति मे देखना चाहते है।

FRANK EDUCATIONAL AIDS

PAGE NO.:
DATE: / /

व्याकरण

प्र.1 निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखो।

① स्वीकार - अस्वीकार

② प्रलय - सृष्टि

③ शूल - प्रसून

④ विश्वास - अविश्वास

⑤ प्यार - घृणा, नफरत

च) सत्य - असत्य

छ) सीमित - असीमित

ज) बढ़ाना - घटाना

प्र.2 नीचे दिए गए उपसर्गों से बने दो-दो शब्द लिखो।

① निः - निःसंदेह, निःशुल्क

② प्र - प्रगति, प्रभाव

③ अ - अज्ञान, अनर्थ

'में' . 'मैं'

फूल पर कैसे चलूँ मैं — उत्तम पुरुष एकवचन कर्ता कारक।

बाँध बाती में — हृदय की आग - अधिकरण कारक।

प्र 3 दिए गए वाक्यों में उचित 'में' अथवा 'मैं' का प्रयोग करे।

(1) मैं दीपक बनकर कैसे जलूँ?

(2) पत्थर में भी कभी न कभी प्राण जाग जाएँगे।

(3) राह के काँटो को रौंदता हुआ मैं आगे बढ़ता जाऊँगा।

(4) मेरा धधकता रूप विश्व में भय उत्पन्न करता है।

5 मैं अपनी भावनाओं की भेंट चढ़ाना चाहता ~~हु~~ हूँ